

DPN 6234

Title: तन्त्रोक्त होम शिवाग्नि विधि TANTROKTA HOMA ŚIVĀSNI VIDHĪ

Run. No. 6925

Cat. No.

Micro. No.

Subject ॐ / Ritual

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 28.7 x 11

Folios 4

Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ Rajendra Shrestha

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thiyasaphu /

oxpimented, nepali paper.

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
ॐ नमः शिवाग्नेये ॥ प्रथमतः सूर्यार्चः ॥

समाप्ति / colophon : - इति तन्त्रोक्त होम शिवाग्नि विधिः समाप्तः ॥ ८

10

15

0 cms.

5

10

15

20

25

30



१ अथादि॥ अस्मत्पुत्री ३ सदा निवर्तमानकं च ४ यं विद्यानादृष्टं कर्मणि निवर्तमानं यस्तु वाक्यं स्यात्प्राधान्यनिष्ठं ४ पूर्णं २३ अथ

[illegible]

कर्ण ॥ वक्रि सूर्यात्मानमकीकवर्ण ॥ हृदयादियुजर्ण ॥ उं वक्रि चेतन्यायनमः ॥ हृदयं नधनूम
 दादग्यत ॥ कवचं न अवगुच्छनकवर्ण ॥ गोयगुं जयत ॥ वक्रि मादाय ॥ उं अन्वग्निति म
 न्दो कर्णं जियदक्षिणी कृत्य ॥ उं मयिगृह्णामत्यग्निं स्थायने ॥ हृदयं न अग्निं समुखीकवर्ण
 ॥ हृदयं न अत्युर्ध्वं हृदयं न कंकर्णदाययत ॥ हृदयं न गिलं रुद्राणि वाव ॥ उं सथाजा
 नायस्वाहा ॥ गुरुधिनं ॥ उं गिरसन रुद्राणि ॥ उं वामदबायस्वाहा ॥ पूगवर्ण ॥ गिरवायां रुद्राणि
 ॥ उं अधावायस्वाहा ॥ सीमन्तानयनं कवचं न रुद्राणि ॥ उं ॐ गानायस्वाहा ॥ वक्रुर्गकत्यना
 ॥ कवचं न रुद्राणि ॥ उं नत्युषायस्वाहा ॥ जानकमर्ण ॥ अमुगगिरसिसिंवनं ॥ गर्कमलायना
 सनं ॥ हृदयं न सुवर्णं कंकर्णदाययत ॥ अमुगसिंवनं ॥ सयसूतकनागय ॥ अरुदिकुपनि
 वृवर्ण ॥ अमुगसिंवनं ॥ लातायनासनं ॥ पंचवक्त्रं समिधं व रुद्राणि ॥ वक्रागं कर्णं वि

भूमनर्कं च तत्कर्म वंदी स्थापनं ॥ हृदयं न वंदी पूजनं ॥ हृन्नुदिना कपालार्चनं ॥ हृदयं न
 तिलं वदिकु ॥ अग्निसंमुखी करणं ॥ वक्त्रापुगी तस्काया पूजनं च ॥ शिवाय अग्निवक्त्रार्थ
 न ॥ ॥ अर्थपदासाधनं ॥ अशुक्लपाकणं ॥ जौं जौं जौं आलम्बनं ॥ अशुक्लपवित्रकंदनं ॥ ह
 दयं न पवित्रवन्धनं ॥ अशुक्लपाकणं ॥ जौं जौं जौं गुवायुतर्पणं ॥ कृगमूलन गुवामूल
 स्थसंत ॥ आत्मतत्वाय नमः ॥ नमः पुनः पुनः पुनः ॥ कृगमश्च न गुवामश्च स्थगत् ॥ उं
 विद्यातत्वाय नमः ॥ पुनः पुनः पुनः ॥ कृगमश्च न गुवामश्च स्थगत् ॥ उं शिवतत्वाय नमः ॥
 ॥ नमः अशुक्ल अद्रिनायकं ॥ जौं जौं जौं चालाउने ॥ अशुक्लवदिकगणय ॥ अशुक्ल
 पाकणं ॥ अग्निपुगी तमश्च स्काया अशुक्लाय तर्पणं ॥ स्वयं वक्त्राणव न अशुक्लाया माय
 निधाय ॥ कृगुजिवावर्कनं वापयि ॥ त्वाग्निगवत्र ॥ पुनः पुनः पुनः ॥ स्वयं विष्णुश्च त्वा द्युतमीगनग

चय॥ गिवसाने कृष्ण। गुणघृते रुद्राणि ॥ पूनः कृष्णान् ॥ उं विष्णुं गच्छ स्वाहा ॥ उं रुद्रं गच्छ स्वाहा ॥ उं अन्न
नै गच्छ स्वाहा ॥ अमुं गच्छ स्वाहा ॥ ददयन् संप्रवर्त ॥ पूनः कृष्णान् कृष्णदीपनं घृतवाला उर्त ॥
ददयन् कृष्णान् घृतपूतं न रुद्राणि ॥ पूनः कृष्णान् कृष्णदीपनं ॥ पूर्ववत् विधानेन ॥ गंधा
दकंपुगीर्तनं निधाय पवित्रं स्पर्शं कृत्वा ॥ अमुं गच्छ स्वाहा ॥ अमुं गच्छ स्वाहा ॥ अमुं गच्छ स्वाहा ॥
नैव। गुर्वीर्तुं। गुर्वीर्तुं। गुर्वीर्तुं। गुर्वीर्तुं। गुर्वीर्तुं। गुर्वीर्तुं। गुर्वीर्तुं। गुर्वीर्तुं। गुर्वीर्तुं। गुर्वीर्तुं।
उं अग्नये स्वाहा ॥ उं अग्नये स्वाहा ॥ उं अग्नये स्वाहा ॥ उं अग्नये स्वाहा ॥ उं अग्नये स्वाहा ॥ उं अग्नये स्वाहा ॥
स्वाहा ॥ पूनः कृष्णान् रुद्राणि ॥ उं सामाये स्वाहा ॥ मध्वमकृष्णान् रुद्राणि ॥ उं हौ अग्नीषामायां
स्वाहा ॥ पूनः कृष्णान् रुद्राणि ॥ उं हौ अग्नये सुष्टिकृतये स्वाहा ॥ षडङ्गन आश्वस्त्या लीधनं मूर्धा दर्श
यत् ॥ अमुं गच्छ स्वाहा ॥ अमुं गच्छ स्वाहा ॥ अमुं गच्छ स्वाहा ॥ अमुं गच्छ स्वाहा ॥ अमुं गच्छ स्वाहा ॥ अमुं गच्छ स्वाहा ॥
सधा जागय स्वाहा ॥ उं हौ वामदेवाय स्वाहा ॥ उं हौ अध्यायय स्वाहा ॥ उं हौ नत्पूषाय स्वाहा ॥ उं हौ

शूयपवगयहामं॥ कर्णिकमग॥ रुलयागनं गनेव अन्नपानं वृडा कनन वतवन्धन विवाह

गमनाय स्वाहा ॥ इति वक्रुर्मनिधानं ॥ उं हं सधा जात वामदवा र्या स्वाहा ॥ उं हं वामदव अथा नार्या स्वा
 हा ॥ उं हं अथा नर त्प नूषा र्या स्वाहा ॥ उं हं न त्प नूष ॥ नार्या स्वाहा ॥ अग्निना गत या वायू अग्नि
 का (न) न वायू का (न) चतुर्थी न यत् ॥ ने र्मत्वादिनिवा तथा ने र्मत्वा का (न) न निवा र्त्त चतुर्थी न यत् ॥
 उं हं सधा जात वामदव अथा नर त्प नूष ॥ न त्प ॥ स्वाहा ॥ इति जिह्वा र्त्तमं ॥ ॥ अमुं न तिले
 रुहाति ॥ ३ ॥ उं हं निवा न य स्वाहा ॥ उं हं ॥ नार्या स्वाहा ॥ नाम क व र्त्त ॥ रुद या य स्वाहा ॥ माता
 पितृ विसृ ज्य ॥ ॥ अथ वक्रा पुनी न व द ला क पा लं स्व स्व म नु ग च ता रु ति ॥ स ग र्व पुनी न निधा य
 । मूलं न च ता रु ति पू र्ण ॥ ॥ पञ्चमि ला रु ति ॥ वी ति पा र्त्त ॥ धनं ॥ अमुं न य व ति ला रु त यं वा
 रु तं ति पा र्त्त स्ति त्वा ॥ आ वा र्त्त पू र्ण ॥ वी ति पा र्त्त द या त रु यत् ॥ च ता रु ति कु म र्त्त । ति ला रु ति य
 र्त्त ॥ ॥ न ना य था का र्त्त ॥ ॥ द ग्ग पा र्त्त न ग्ग न्नि क यो र्त्त के व लि पु दानं ॥ उं हं नू द त्प ॥ स्वा

कृग। उकमंग। गिवग। कि कतग। दिसर्व ४ पृ० ४

[illegible]

५४

श्रुतिषकै। वन्दनादि॥ आशीर्वादि॥ उँ उद्ययं नमस्वति॥ सर्वविसर्जनी॥ यरू विसर्जनी॥ न्यास॥ सूर्य
शक्तौ॥ इति तन्त्राकृष्टा मणिवाग्निविधिः समाप्तः॥ ॥

शिव

४